* ओ३म् *

वैदिक-सन्ध्या ।।

तथा

वैदिक प्रार्थना

जिसका—

श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य
महात्मा स्वामी अच्युतानन्द
सरस्वतीजी महाराज ने बनाया

और

श्री लाला लक्ष्मणरामजी अग्रवाल उपप्रधान
आर्य्यसमाज चौड़ाबाजार लुधियाना
निवासी ने अधिकारियों को विना मूल्य
देने के लिये लुधियाने में छपवाया ।

४१ वीं वार संवत्सर १९८८ विक्रमीय

भूमिका ।

ब्रह्मणोपासिता सन्ध्या विष्णुना शङ्करेण च ।
नोपास्ते कश्च तां देवीं सिद्धिकामो द्विजोत्तम ॥१॥

अर्थ-ब्रह्माजी ने सन्ध्या उपासना की थी विष्णु महाराज और शिवजी महाराज भी नियम से सन्ध्या करते थे, ऐसी मोक्ष पर्य्यन्त सब सुखों को देने वाली सन्ध्या उपासना को सुख की इच्छा करने वाला कौन द्विजों में उत्तम है जो न करे ? अर्थात् मुक्ति आदि सुख को चाहने वाले सब पुरुषोत्तम अवश्य ही सन्ध्या उपासना करते हैं । मनुजी ने लिखा है कि जो पुरुष प्रातःकाल और सायंकाल में सन्ध्या नहीं करता वह शूद्र है, उसने अपने सब कुटुम्ब को शूद्र बना लिया, उस से द्विज लोग रोटी बेटी का व्यवहार न करें, सन्ध्या न करने वाले का यज्ञादि उत्तम कर्मों में अधिकार नहीं है इस लिए सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये ।

शुद्ध एकान्त देश में अन्दर और बाहर से शुद्ध होकर प्रेम से सन्ध्या करें, बाहर स्नानादिकों से शरीर को शुद्ध करना चाहिए परन्तु स्मरण रहे कि मोक्ष-प्राप्ति में अन्दर मन की शुद्धि की बड़ी आवश्यकता है। इस लिये सन्ध्या करते समय काम क्रोधादि दोषों से मन को रहित करके, शुद्ध एकाग्र मन से बड़े प्रेम-पूर्वक सन्ध्या, प्रार्थना, उपासना, और प्रभु की स्तुति करनी चाहिये। इस प्रकार सन्ध्या करने से मन प्रसन्न और निर्मल होगा, पापों से घृणा होगी, बल और आयु की वृद्धि होगी, नीरोगता बढ़ेगी और जगत् पिता की कृपा से दुर्गति कभी नहीं किन्तु सदा उत्तम गति ही होगी। परमेश्वर के सब नामों में मुख्य नाम ओङ्कार है। इस का संक्षिप्त अर्थ यह है—भवतीत्योम् जिस के उच्चारण और जिसके अर्थ परमात्मा के

ध्यान करने वालों को सब दुःखों से जो रक्षा करे और अपने भक्तों को सब सुखों में जो तृप्त करे उस को ओ३म् कहते है। यह ओ३म् अ उ म् इन तीन अक्षरों से बना है. अ के अर्थ हैं विराट अग्नि विश्वादि। सब के प्रकाशक राजराजेश्वर सर्वनियन्ता प्रभु को विराट ज्ञान स्वरूप पूजनीय सर्वत्र व्यापक को अग्नि, सब के आश्रय और सब ब्रह्माण्डों में प्रविष्ट को विश्व कहते हैं। उ के हिरण्यगर्भ वायु तैजसादि अर्थ हैं। सूर्य आदि ज्योति जिसके गर्भ में अर्थात् आश्रित हों, उसको हिरण्यगर्भ कहते हैं। अनन्त बली और सब का धारण करने हारा होने से उस को वायु कहते हैं। आप प्रकाशस्वरूप और सबका प्रकाशक हैं, इसी लिए उसका तैजस नाम है। ईश्वर आदित्य प्राज्ञ यह म् के अर्थ हैं। सर्वशक्तिमान् न्यायकारी अनन्त ऐश्वर्ययुक्त शासक स्वामी को ईश्वर, नाशरहित को आदित्य, ज्ञानस्वरूप और सर्वज्ञ स्वामी प्रभु को प्राज्ञ कहते हैं।

* आचमन मन्त्रः *

ओ३म् शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥१॥ यजु०

(शम्) कल्याणकारी (नः) हम पर (देवीः) सर्वप्रकाशक (अभिष्टये, मनोवांछितसुख (आपः) सर्वव्यापक (भवन्तु) होवें (पीतये) पूर्णानन्द से तृप्ति के लिये (शंयोः) सुख की (अभि) सब ओर से (स्रवन्तु) वर्षा करें (नः) हम पर। हे सर्वव्यापक सर्वप्रकाशक परमेश्वर! मनो-वांछित सुख और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति के लिए आप हमारे कल्याणकारी होवो और हम पर सुख की सर्वदा वर्षा करो ॥१॥

* अङ्गस्पर्शमन्त्राः *

ओं वाक् वाक् । ओं प्राणः प्राणः । ओं चक्षुः चक्षुः । ओं श्रोत्रं श्रोत्रम् । ओं नाभिः । ओं हृदयम् । ओं कण्ठः । ओं

शिरः । ओं बाहुभ्यां यशो बलम् । ओं करतलकरपृष्ठे ॥२॥

हे अन्तर्यामिन्! मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि वाक् व रसना, प्राण, नेत्र, श्रोत्र, नाभि हृदय, कण्ठ, सिर, बाहु, हाथ की तली और हाथ की पृष्ठ आदि से शुभ काम करूं कदापि पाप न करूं, मेरे सब अङ्ग उपाङ्गों को कृपया आप कीर्ति और बल दो ॥२॥

* मार्जनमन्त्राः *

ओं भूः पुनातु शिरसि । ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओं स्वः पुनातु कण्ठे । ओं महः पुनातु हृदये । ओं जनः पुनातु नाभ्याम् । ओं तपः पुनातु पादयोः । ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ॥३॥

(भूः) सत्यस्वरूप सब के जीवन का हेतु प्राण से भी प्यारा परमात्मा (पुनातु) पवित्र करे (शिरसि) सिर पर, (भुवः) अपने सेवकों को दुःखों से अलग कर सदा सुख में रखने वाला चैतन्यस्वरूप प्रभु (पुनातु नेत्रयोः) पवित्र करे दोनों नेत्रों को, (स्वः) सब में व्यापक सब को नियम में रखने वाला और सब के ठहरने का स्थान तथा आनन्दप्रद आनन्दस्वरूप देव (पुनातु कण्ठे) पवित्र करे कण्ठ को, (महः) सब से बड़ा और सब का पूज्य देव (पुनातु हृदये) पवित्र करे हृदय को, (जनः) सर्व जगत् का उत्पादक पिता (पुनातु नाभ्याम्) पवित्र करे नाभि को (तपः) दुष्टों को सन्तापकारी और ज्ञान-स्वरूप परमेश्वर (पुनातु पादयोः) पवित्र करे पाओं को, (सत्यम्) अविनाशी प्रभु (पुनातु पुनः शिरसि) फिर सिर को पवित्र

करे, (खंब्रह्म) आकाशवत् व्यापक सब से बड़ा जगदीश्वर (पुनातु सर्वत्र) पवित्र करे सब स्थान में ।३॥

* प्राणायाममन्त्राः *

ओं भूः । ओं भुवः । ओं स्वः । ओं महः । ओं जनः । ओं तपः । ओं सत्यम् ॥४॥

हे ईश्वर ! आप सद्रूप और प्राणप्रिय। चैतन्यस्वरूप और दुःखहर्ता । आनन्द स्वरूप सर्वव्यापक । सब से बड़े और सबके पूज्य । सब के जनकपिता । दुष्टों को दण्डदाता, सब को जाननेवाले । सज्जनों के हितकारी व अविनाशी हो ॥४॥

* अघमर्षणमन्त्राः *

ओं ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥५॥ ऋग्वेद ॥

(ऋतम्) वेद (च) और (सत्यम्) कार्य रूप प्रकृति (अभि इद्धात् तपसः) सब ओर से प्रकाशमान ज्ञानस्वरूप प्रभु से (अधि अजायत) उत्पन्न हुए (ततः रात्री अजायत) उसी से प्रलयरूपी रात्रि उत्पन्न हुई (ततः) (समुद्रः अर्णवः) उसी परमेश्वर के अनन्त-सामर्थ्य से पृथिवी और अन्तरिक्ष में जो महासमुद्र है उत्पन्न हुआ ॥५॥

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अ-होरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतोवशी ॥

(समुद्रात् अर्णवात् अधि) उस समुद्रादि पंचभूतों की उत्पत्ति के पश्चात् (संवत्सरो अजायत) वर्ष उत्पन्न हुआ (विश्वस्य) सब जगत् को (वशी) वश में रखने वाले प्रभु ने (अहोरात्राणि) दिन रात को (मिषतः) सहज स्वभाव से (विदधत्) बनाया ॥६॥ ऋग०

सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥७॥

(सूर्य्याचन्द्रमसौ) सूर्य चन्द्र को (धाता) सब के धारण पोषण करने वाले प्रभु ने (यथा पूर्वम् . पहिले कल्प जैसे (अकल्पयत्) बनाया (दिवम्) प्रकाश को (पृथिवीम्) धरती को (अन्तरिक्षम्) आकाश को (अथो) और (स्वः) जितने आकाश के बीच में लोक हैं उन सबको उसी प्रभु ने बनाया ॥७॥ ऋ॰ ग॰

* अथर्ववेदस्य षट् मनसापरिक्रमामन्त्राः *

ओं प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिता-ऽऽदित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥८॥

(प्राचीदिक् पूर्व वा सन्मुख दिशा का (अग्निः)सर्वज्ञ ईश्वर (अधिपतिः) राजा (असितः) बन्धन-रहित (रक्षिता) रक्षा करने वालाहै (आदित्या इषवः) जिसके बाण आदित्य की किरणें हैं जिन किरणों द्वारा पृथिवी पर जीवन आता है। (तेभ्यः नमः अधिपतिभ्यः) उन सब के स्वामी ईश्वर के गुणों को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं (रक्षितृभ्यः नमः इषुभ्यः नमः एभ्यः अस्तु) जो ईश्वर के गुण जगत् की रक्षा करने वाले और पापियों को बाणों के समान पीड़ा देने वाले हैं उन को हमारा नमस्कार व सत्कार हो (यः अस्मान् द्वेष्टि) जो प्राणी अज्ञान से हमारा द्वेष करता है (यम् वयम् द्विष्मः) जिसका अज्ञान से हम द्वेष करते हैं (तम्) उन सबकी बुराई रूप द्वेष को (वो जम्भे दध्मः) उन अधिपति रक्षक और बाणरूप आप के दाढ़ों के बीच में धरते वा

दण्ड करते हैं कि जिस से हम लोग किसी से वैर न करें किन्तु सब लोग परस्पर मित्र-भाव से वर्त्तें ॥८॥

ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः तेभ्यो० ॥९॥

(दक्षिणादिक्) दाहिनी दिशाका (इन्द्रः) परमैश्वर्यवाला ईश्वर स्वामी है (तिरश्चिराजी) विना हड्डी के पशुओं की पंक्ति से रक्षक हैं, (पितरः इषवः) ज्ञानी लोग बाणरूप हैं, उन ज्ञानियों के द्वारा हमें ज्ञान प्रदान करते हैं, आगे पूर्व के समान ॥९॥

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः । तेभ्यो० ॥१०॥

(प्रतीची दिक्) पश्चिम दिशा वा पृष्ठभाग उस में (वरुणः) जो सब से उत्तम सब के राजा जो परमेश्वर हैं (पृदाकू) बड़े २ हड्डी वाले विषधारी पशुओं से हमारी रक्षा करने

वाले हैं (अन्नम्) आप हमारे प्राणों की अन्न द्वारा रक्षा करते हैं। आगे पूर्ववत् ॥१०॥

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः। तेभ्यो० ॥११॥

(उदीचीदिक्) उत्तर दिशा वा बाईं ओर (सोमः) आप शान्तस्वरूप परमात्मा व्याप्त हैं (स्वजः) अनेक प्रकार अजन्मा और हमारे रक्षक हैं (अशनिः) बिजुली द्वारा हमारे रुधिर की गर्मी और प्राण की रक्षा करते हैं। आगे पूर्ववत् ॥११॥

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो० ॥११॥

(ध्रुवा) हे प्रभो! जो हमारे नीचे की ओर दिशा है उस में (विष्णुः) आप ही व्यापक होने से विद्यमान स्वामी हैं (कल्माषग्रीवः) जो आप के हरे रङ्ग वाले वृक्षादि ग्रीवा के

समान हैं उन वृक्ष और वेलों के द्वारा हमारे प्राणों की रक्षा करते हैं। आगे पूर्ववत् ॥१२॥

ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो० ॥१३॥

(ऊर्ध्वा) हे महा प्रभो ! जो हमारे ऊपर की दशा है उस में आप (बृहस्पतिः) आकाश सूर्य्यादिकों के पति वा वेदरूपी वाणी के स्वामी (श्वित्रः) शुद्ध पवित्र-स्वरूप पवित्र करने वाले व श्वेत कुष्टादि रोगों से रक्षा करने वाले हो, आप वर्षा द्वारा हमारी खेतीको सींचते हैं, जिससे हमारा जीवन होताहै। आगे पूर्ववत्

* उपस्थानमंत्राः *

अर्थात् प्रभु की स्तुति प्रार्थना बोधक यजुर्वेद के मन्त्र कहे जाते हैं—

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥१४॥

(तमसः परि स्वः) हे महादेव ! पिताजी सब अन्धकार से पृथक सुख-स्वरूप (उत्तरम्) प्रलय के पीछे भी सदा वर्त्तमान (देवं देवत्रा) प्रकाशकों में प्रकाशक (सूर्यम्) चराचर के आत्मा (ज्योतिः उत्तमम्) ज्ञान स्वरूप और सब से श्रेष्ठ आप को (पश्यन्तः) जानते हुए (वयम् उद् अगन्म) हम लोग आपकी शरण को प्राप्त हुए हैं आप ही हमारी रक्षा करें ॥१४॥

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥५॥

(जात वेदसम्) जिस से ऋग्वेदादि चार वेद प्रगट हुए हैं और जो आप प्रकृति आदि सब भूतों में व्याप्त हो रहे हैं और जो सब भूतों के उत्पादक हैं (देवम् सूर्यम्) देवों के देव सब के प्रकाशक (त्यम्) उस आप परमात्मा को (दृशे विश्वाय) सब को दिखलाने के लिए (केतवः) वेद अथवा जगत् के

पदार्थ (उद्वहन्ति) पताका का काम देते हैं।
जैसे झण्डियां मार्ग दिखलाती है वैसे ही
वेद और सृष्टि नियम उस आप की महिमा
को दिखला रहे हैं ॥१४॥

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य
वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्त-
रिक्षं सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।

हे स्वामिन्! यद्यपि संसार के पदार्थ
आप को दर्शाते है, परन्तु आप (चित्रम्) अद्भुत
स्वरूप हैं (देवानाम्) विद्वानों के हृदय मे सदा
(उद् अगात्) प्राप्त हो रहे हैं (अनीकम्) बल
स्वरूप हैं (मित्रस्य) भक्त सूर्यलोक (वरुणस्य
श्रेष्ठ पुरुष व चन्द्र, (अग्नेः) और अग्नि, इनसब
के (चक्षुः) प्रकाशक है (जगतः) जङ्गम (तस्थुषः
और स्थावर संसार के आप (आत्मा
आत्मा अन्तर्यामी है (सूर्यः) इसी से आप

सूर्य कहलाते हैं (द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षम्) द्यु लोक पृथिवी और मध्य लोकों में (आ प्रा) सब ओर से आप व्याप्त हैं ॥१६॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येमशरदःशतंजीवेमशरदःशत शृणुयामशरदःशतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाःस्याम शरदःशतं भूयश्चशरदःशतात्

(तत् चक्षुः) वह आप ब्रह्म सब के द्रष्टा हैं (देवहितम्) सज्जन विद्वानों के हितकारी (पुरस्तात्)सृष्टि से पहिले भी वर्तमान (शुक्रम्) शुद्ध स्वरूप (उत् चरत) प्रलय के पीछे भी रहने वाले हैं, उस आप की कृपा से हम लोग (शतम्) सौ (शरदः) वर्ष (पश्येम) देखें. (शतम् शरदः जीवेम) सौ बरस जीवें (शतम् शरदः शृणुयाम) सौ बरस सुनें (शतम् शरदः प्रब्रवाम) सौ बरस बोलें वेद उपदेश करें

(अदीनाः स्याम शरदः शतम्) सौ वरस हम स्वतन्त्र होवें (भूयः च शरदः शतात्) और सौ वरस मे अधिकभी हमदेखें सुनें जीवें और स्वतन्त्रतामे आपके गुणगावें व वैदिकधर्म का उपदेशकरें १७

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात

(ओं भूर्भुवः स्वः) इनका अर्थ पीछे करआए हैं. (सवितुः) सब जगत के उत्पन्न करने वाले (देवस्य) धर्मात्माओं को आनन्द देनेवाले देव का (तत्वरेण्यम् भर्गः) उस पापनाशक पूजनीयतम विज्ञानस्वरूप श्रेष्ठ तेज का (धीमहि) हम ध्यान करते हैं। (यः) जो सविता जगत-पिता (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) पापों से हटाकर अच्छे कामों में सदा प्रेरणा करें अर्थात् सीधे रस्ते पर चलावें ऐसी प्रार्थना है ॥१८॥ इति गुरुमन्त्रः॥

* नमस्कारमन्त्रः *

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥१६ य० अ० १६ मं० ४१

॥ इति सन्ध्या ॥

(नमः) नमस्कार है (शम्भवाय च मयः भवाय च) कल्याण के और सुख के स्रोत चश्मे को (नमः शंकराय च मयस्कराय च) कल्याण के देने वाले और सुख के देने वाले को नमस्कार है (नमः शिवाय च शिवतराय च) कल्याणस्वरूप और अत्यन्त कल्याणस्वरूप आप को बारम्बार हमारा नमस्कार है॥१९॥

ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

* वैदिक प्रार्थना *

ओं विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥ यजु०॥

हे सवितः! सकल जगत् के उत्पादक, सब सुखदाता परमेश्वर देव! आप हमारे संपूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन, पाप, दुष्ट संकल्प और दुःखों को दूर कीजिये (यद्भद्रं) जो कल्याण-कारक गुण कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं वे सब हम को प्राप्त कीजिये ॥१॥

ओं इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥२॥ यजु०

हे जगदीश्वर! जो आप बिजुली के तुल्य संसार के बीच प्रकाशमान हैं, उन आप की कृपा से हमारे आत्माओं के लिये सुख होवे और हमारे गौ अश्व आदि उपकारक सब पशुओं के लिये भी सुख होवे ॥२॥

ओं शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा।

शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः

हे मङ्गलप्रद भगवन्! आप सब से प्रेम करने वाले सब के सच्चे मित्र हैं आप हम को सदा सुखदायक होओ, हे वरुण सर्वोत्तम! आप हम को परम सुख देओ, हे अर्यमा यम धर्मन्यायकारिन्! आप हमको सुखदायक होओ, हे इन्द्र परमैश्वर्ययुक्त प्रभो! आप हमें सुखी करें, हे वेदरूप महाविद्याधिपते बृहस्पते! आप हमें वेदानुयायी बना सुख देवें, हे पराक्रमेश्वर सर्वव्यापक विष्णो परमात्मन! आप हमें बल देकर सदा सुखी बनावें ॥३॥

ओं यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः ॥य०

हे भगवन्! जिस २ देश से आप सम्यक् चेष्टा करते हो उस २ देश से हम को अभय करो अर्थात् जहां २ हम को भय प्राप्त होने

लगे, वहां २ से हम लोगों को सर्वथा कृपाकर अभय करो तथा सर्व प्रजा से हमको सुखी करो और हमारी प्रजा सदा सुखी रहे तथा पशुओं से भी हमको निर्भय करो ॥४॥

ओं स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये ॥५॥ यजु० ॥

हे विज्ञानस्वरूप अग्ने ! आप हमारे लिये सुख से श्रेष्ठ उपाय के प्रापक, अत्युत्तम स्थान के दाता कृपाकर सर्वदा होवो, हे कल्याण-कारक पिता जी हमारी दुःखितावस्था को दूर कर हमें सुखितावस्था दिखलाओ, जैसे दयालु पिता अपने पुत्र को सदा सुखी ही रखता है, वैसे आप हम को सदा सुखीही रक्खो इस में आप की भी शोभा है ॥५॥

ओं शान्ता द्यौः शान्ता पृथिवी शान्त-मिदमुर्वऽन्तरिक्षम्। शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वोषधीः ॥६॥ अथर्व०॥

हे दयामय परमात्मन् ! आप की कृपा से (शान्ता द्यौः) हमारे लिए द्युलोक सुख कारक हो (शान्तम् इदम् उरु अन्तरिक्षम्) यह विस्तीर्ण मध्यलोक सुखदायक हो शान्ता उदन्वतीः आपः) समुद्र और सब जल सुख-दायक हों (शान्ताः नः सन्तु ओषधीः) हमारे लिए गेहूं, चना, चावल आदि सब परिपक्व अन्न सुखदायक हों ॥ ६ ॥

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ य०

हे अग्ने ज्ञानस्वरूप परमात्मन् ! विद्वानों के समूह तथा यथार्थ विज्ञानवाले पितर जिस धारणा वाली बुद्धि मेधा को धारण करते हैं, उस श्रेष्ठ बुद्धि के साथ हमें मेधावी करो। इस प्रार्थना को आप स्वीकार करें जिस से हमारी जड़ता दूर हो ऐसे हमारी वाणी कहरही है ॥ ७ ॥

ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि

हे ज्ञानस्वरूप ईश्वर अग्ने! सत्य भाषण ब्रह्मचर्यादि सत्य व्रतों का मैं आचरण करूंगा, इस मेरे व्रत को आप कृपाकर सिद्ध करें तथा अनृत विनाशी देहादि पदार्थों में दृढ़ राग को छोड़कर मैं सत्य अविनाशी विद्या और धर्म को प्राप्त होता हूं, मेरी इस इच्छा को आप पूरी करें, जिससे मैं सदाचारी होकर आप की प्रेम भक्ति में तत्पर होऊं ॥ य० ॥ ८ ॥

त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अथा ते सुम्नमीमहे ॥२॥ साम०

हे सारे ब्रह्माण्डों में वर्तमान व इन सबके वासस्थान आधारस्वरूप वसो! तू ही हमारा पालक पिता है। हे अनन्त पदार्थों के उत्पन्न करनेवाले प्रभो! तू ही हमारी मान देने वाली सच्ची माता है, अतः हम आप के प्यारे बच्चे, आप ही से अपने कल्याण की प्रार्थना करते हैं ॥२॥

त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः ॥१०॥ साम०

(अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप ज्ञानप्रद परमात्मन्! (त्वम् जनानाम् जामिः) आप सब प्रजाजनों के बन्धु (प्रियः मित्रः) सदा प्यारे मित्र (सखा) चेतनता से समान नाम वाले (सखिभ्यः ईड्य असि) हम जो आप के सखा हैं इन से आप ही सदा स्तुति के योग्य हैं अन्य नहीं ॥१०॥

ओं सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते। त्वामभिप्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥११॥ साम०

हे (इन्द्र) परम ऐश्वर्ययुक्त प्रभो! (तेसख्ये) आप की अनुकूलता में हम (वाजिनः बल युक्त हुये (माभेम) किसी से न डरें (शवसः पते) हे बलपते! (जेतारम्) सब को जीतने वाले (अपराजितम्) और किसी से न हारने वाले (त्वाम्) आपको (अभिप्रणो नुमः) हम बारम्बार चारों ओरसे प्रणाम करते हैं ॥११॥

ओं भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः। १२य०

हे देवेश्वर प्रभो ! हमलोग कानों से सदा भद्र कल्याण को ही सुनें, अकल्याण की बात भी हम कभी न सुनें। हे यजनीय पूज्य पिताजी, हम आंखों से सदैव मंगलसुख को ही देखें, हमारे अङ्ग उपाङ्ग व शरीर सदा दृढ़ रहें जिस से हम लोग स्थिरता से आप की स्तुति और परोपकारादि धर्मरूप आप की आज्ञा का पालन करसकें। भगवन् ! आपकी और आप के सेवक विद्वान् ही जो देव हैं, उनकी सेवा के लिये हम आयु को प्राप्त होवें। हमारा सारा जीवन आपकी भक्ति के लिए, और आप के प्यारे विद्वान् महात्मा सन्तजनों की सेवा के लिये हो हमारी यही प्रार्थना है सो कृपा कर आप स्वीकार करें ॥१२॥

* प्रातः पठनीयाः पंच ऋग्वेदमन्त्राः *

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम।१।

(प्रातः) प्रभातवेला में (अग्निम्) ज्ञानस्वरूप (इन्द्रम्) परमैश्वर्ययुक्त प्रभु को (हवामहे) हम स्तुति करते हैं (मित्रावरुणा) प्राणउदान के समान प्रिय (अश्विना) सूर्य चन्द्र के रचयिता परमात्मा की (भगम्) भजनीय सेवनीय ऐश्वर्ययुक्त (पूषणम्) पुष्टिकर्ता (ब्रह्मणस्पतिम्) अपने उपासक वेद और ब्रह्माण्ड के पालनकर्ता (सोमम्) अन्तर्यामी प्रेरक (रुद्रम्) रोगनाशक जगदीश्वर की (हुवेम) स्तुति प्रार्थना करते हैं ॥१॥

ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता। आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥

(जितम् जयशील भगम्) भगवान् (उग्रम्) तेजस्वी (अदितेः) अन्तरिक्ष के (पुत्रम्) सूर्य के जनक (यः विधर्ता) जो सूर्यादि लोकों का विशेष कर के धारणकर्ता और (आध्रः) सब ओर से सबका धारण करने हारा (यम्चित्) जिस किसी का भी (मन्यमानः) जाननेहारा (तुरश्चित्) दुष्टों को भी दण्डदाता (राजा) सब का प्रकाशक है (यम् भगम्) जिस भजनीय को (चित्) भी (भक्षीति) इस प्रकार सेवन करता हूं ऐसा परमेश्वर सब का (आह) उपदेश करता है कि तुम लोग सूर्यादि जगत् का कर्ता धर्ता जो मैं हूं, उस की उपासना किया करो, इस से (वयम् हुवेम) हम उसकी स्तुति करते हैं ।२।

ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः । भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ।३।

हे (भग) भजनीय प्रभो ! (प्रणेतः सत्य के उत्पादक सत्याचार में प्रेरक सत्यराधः) सत्य धनके दाता (नः) हम को (इमाम्) इस (धियम्) प्रज्ञा को (ददत्) दीजिये (उदव) रक्षा करो (गोभिः अश्वैः) गाय अश्वादि उपकारक पशुओं से हमारी समृद्धि को (नः प्रजनय) हमारे लिये प्रकट कीजिये। (हम नृभिः) उत्तम मनुष्यों से (नृवन्तः प्रस्याम) वीर मनुष्य युक्त अच्छे प्रकार होवें ॥३॥

ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उतमध्ये अह्नाम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्य-स्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥

(उत) और (इदानीम्) इसी समय (प्रपित्वे) उत्तमता की प्राप्ति में (उत) और (अह्नाम् मध्ये) इन दिनों के मध्य में (भगवन्तः स्याम) ऐश्वर्ययुक्त होवें (उत मघवन्) और हे पूज्य धनदाता ! (सूर्यस्य उदिता)

सूर्य के उदय में हम (देवानाम् सुमतौ स्याम) पूर्ण विद्वान् महात्माओं की उत्तम प्रज्ञा और आज्ञा में सदा प्रवृत्त रहें ॥४॥

ओं भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह ॥५॥

हे (भग) भगवन्! (एव) आप ही (भगवान् अस्तु) हमारे पूजनीय देव हूजिये (तेन) उसी हेतु से (देवाः वयम्) हम विद्वान् लोग (भगवन्तः स्याम) सकलैश्वर्य युक्त होवें (तम् त्वा भग) उस आप प्रभु को (सर्वः) सब सज्जन (इत् जोहवीति) निश्चय कर के प्रशंसा करते हैं (सः) सो आप (भग) हे भगवान् (इह) इस संसार में (नः हमारे (पुर एता भव) अग्रगामी सत्य कर्मों में प्रेरक हूजिये ॥५॥

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकआसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥१०॥

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृत-मानशानास्तृतीय धामन्नध्यैरयन्त ॥११॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहु [illegible] नो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ॥८॥

[illegible] शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयःशान्तिर्विश्वे देवाःशान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि य० ॥९॥

ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!